|  |
| --- |
| 25. Mai 2025 |
| **6. Sonntag der Osterzeit C** |
| 1. Lesung: Apg 15, 1-2.22-29; 2. Lesung: Offb 21, 10-14.22.23; Evangelium: Joh 14, 23-29 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 147, 1+2+4  | Herr Jesu Christ, dich zu uns wend |
|  | GL 326, 1+2+4 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  | GL 472, 1-4  | Manchmal feiern wir mitten im Tag |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 6  | Herr Jesus |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 706 | Wir beten an |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 67, 2-8 |  |
|  | Kehrvers: GL 46, 1 | Lass dein Angesicht leuchten |
|  | GL 322, 1+12 | Ihr Christen singet |
|  |  |  |
|  | Wenn nur die 2. Lesung genommen wird: |
|  | GL 479, 1+3 | Eine große Stadt |
|  | GL 553, 1+2+4+5 | Jerusalem, du hochgebaute Stadt |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Wer mich liebt, hält fest an meinem Wort.* |
|  | *Mein Vater wird ihn lieben, und wir werden bei ihm wohnen.* |
|  |  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  | GL 759 | Der Glaube ist nun fest verbürgt |
|  | GL 456 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 1+4 | Also sprach beim Abendmahle |
|  | GL 464, 1+5-8 | Gott liebt diese Welt |
|  | GL 325, 1-3 | Bleibe bei uns |
|  | GL 445 | Ubi caritas + Priestergebet: |
|  |  | „Gepriesen bist du …“ |
|  | GL 784 | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 762 | Verklärter Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 348, 2+4+5 | Du heller Schein |
|  | GL 357, 3 | Gieß sehr tief in mein Herz hinein |
|  | GL 366, 1-3 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 389, 3! +5 | Dass du mich einstimmen lässt  |
|  | GL 474, 4+5 | Wenn wir die Liebe leben |
|  | oder ein Marienlied |